मुल्य रु। ५-००
सलंग अंक ७६ अगस्त २०१३

श्री स्वामिनारायण

मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख

गुरुपूर्णिमा प्रसंग पर
अहमदावाद मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री के गुरु पूजन
एवं मूली मंदिर में सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) झूलासन मंदिर में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) वडनगर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग में श्री घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(३) भराडा (मूलीदेश) भाइयों के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(४-५-६) श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटप के शतवार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए तथा विष्णुयाग की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ में लाभ लेते हुए प.भ. जी.के. पटेल तथा कथा श्रवण कराते हुए शास्त्री पी.पी. स्वामी ।(७) कुजाड गाँव में महापूजा की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।(८) सायरा मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर यज्ञ में श्रीफल का होम करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(९) मोडासा नूतन शिखरी मंदिर के खात मुहूर्त प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री ।(१०) अयोध्या मंदिर में ९९ वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए तथा नूतन ''धर्मभक्ति यात्री निवास'' का उद्घाटन करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री साथ में महंत देव स्वामी ।(११) छपैया गौघाट तीर्थ में प.भ. नंदूभाई पटेल तथा प.भ. भगवानभाई द्वारा हुये जीर्णोद्धार के काम का वरसात में निरीक्षण करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।

॥ अस्मदीयम् ॥

परमकृपालु परमात्मा सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान खूब दया के सागर है । प्रत्येक जीव का भगवान खूब ध्यान रखते हैं । पूरे भारत देश में खूब उत्तम बरसात हुआ है । बहुत सारे बांधभर गये । सरोवर भर गये हैं । खेती के लिये बरसात अच्छा माना जाता है । वर्तमान में चातुर्मास चल रहा है । श्रीहरि के आश्रित हरिभक्तों ने नियम लिया होगा । शास्त्र का पठन, कथा श्रवण, भगवान की प्रदक्षिणा, दंडवत, पंचामृत स्नान द्वारा भगवान की पूजा भगवान का महामंत्र जप, स्तोत्रपाठ, इत्यादि आठ नियम में से कोई एक नियम का कड़काई से पालन करना ।

इस शरीर से जितनी हो सके उतनी भगवान की भजन करनी चाहिए । इसी में अपना कल्याण है ।

वर्तमान में विदेश के अपने मंदिरो में उत्सव का क्रम चल रहा है । विदेश में रहने वाले हरिभक्तों के घर उत्सव का माहौल है । वर्तमान में लंडन विल्सडन श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री घनश्याम महाराज का रजत जयंती पाटोत्सव समस्त धर्मकुल की उपस्थिति में तथा भुज एवं अहमदाबाद मंदिर के संतो की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया था । कच्छ के लंडन में रहने वाले हरिभक्तों ने कथाश्रवण, देवदर्शन, तथा धर्मकुल का दर्शन करके संतो की अमृतवाणी का लाभ लिये थे । इसी तरह अमेरिका में चेरीहील तथा कोलोनिया मंदिर तथा शिकागों श्री स्वामिनारायण मंदिर का १५ वाँ पाटोत्सव, प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी, प.पू. श्रीराजा के सांनिध्य में धूमधाम से मनाया गया था । ऐसे उत्सव को जीवन में उतारा जाय तो निश्चित ही उस जीव का कल्याण अवश्य होगा ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जुलाई-२०१३)

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६ प.भ. गोपालभाई पटेल के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, सिंगरवा।

१०-११ केरा (कच्छ) पदार्पण।

१४ मोडासा श्री स्वामिनारायण मंदिर के खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।

१८ जुलाई से ६ अगस्त - श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडनलेन लंडन - बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का रजत जयंति महोत्सव अमेरिका में श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया तथा चेरीहिल पाटोत्सव प्रसंग पर एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो के १५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर तथा सत्संग के प्रचारार्थ विचरण।

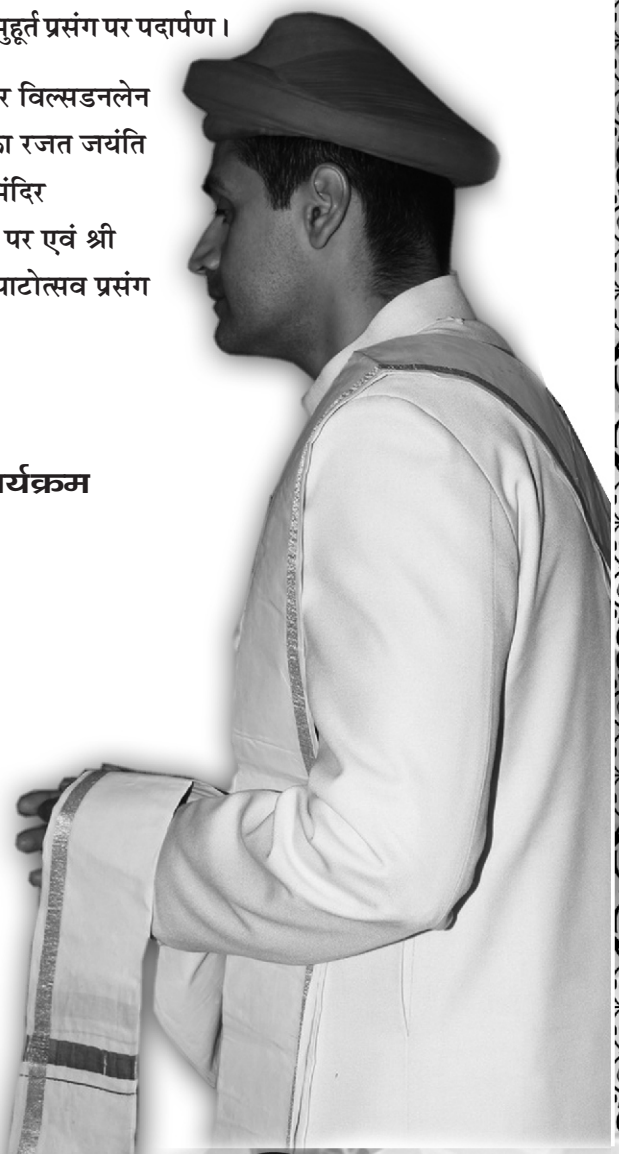

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री वज्रेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (जुलाई-२०१३)

२२ जुलाई से १२ अगस्त - श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडनलेन लंडन - बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का रजत जयंति महोत्सव अमेरिका में श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया तथा चेरीहिल पाटोत्सव प्रसंग पर एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो के १५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर तथा सत्संग के प्रचारार्थ विचरण।

यज्ञोपवीत

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुर धाम)

वेदो में सोलह संस्कार की विधिबताई गयी है । जिस में अत्यन्त महत्व का यज्ञोपवीत संस्कार कहा गया है । यज्ञोपवीत संस्कार को जनेॐ, व्रतबन्ध, उपनयन, यज्ञसूत्र, सवितासूत्र ब्रह्मसूत्र इत्यादिनामों से वर्णन किया गया है । वर्णाश्रम धर्म के अनुसार तीन वर्ण को यज्ञोपवीत का अधिकार दिया गया है । गर्भधारण से आठवे वर्ष में ब्राह्मण का यज्ञोपवीत होना चाहिए, जिस में विष्णु का वचन है कि - धन की इच्छा वाला ६ठ्ठे वर्ष विद्या की इच्छावाला सातवें वर्ष समस्त कामनाओं की पूर्ति के लिये आठवें वर्ष, शक्ति तथा बल की इच्छावाला नवमें वर्ष यज्ञोपवीत धारण करें । निर्णय सिन्धु में कहा गया है कि आपत्काल में ब्राह्मण सोलह वर्ष तक यज्ञोपवीत धारण करें, इसी तरह क्षत्रिय बाइस वर्ष तक वैश्य चौवीस वर्ष तक यज्ञोपवीत धारण करें । इसके बाद गायत्री के अतिवर्तन का दोष लगता है । यज्ञोपवीत का समय ब्राह्मणो के लिये वसंतऋतु संस्कार के लिये श्रेष्ठहै।

उसमें भी ब्राह्मणों का जन्म नक्षत्र, मास, तिथि, दिन निषिद्ध है । चन्द्र नक्षत्र में हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, ज्येष्ठा, मृगशीर्ष, पुष्य, अश्विनी, रेवती उत्तम बताई गयी है । बुध, गुरु, शुक्र दिन उत्तम है, रवि मध्यम है, सोम कनिष्ठ है । यज्ञोपवित संस्कार के द्वारा वेदाध्ययन, यज्ञादिकर्म, होमात्मक कर्म इत्यादि कर्म करने का अधिकार मिलता है।

यज्ञोपवित दीक्षा देने का प्रथम अधिकार पिता का, उनके अभाव में पितामह का, उनके अभाव में काका का उनके अभाव में सोदरभाई का उनके अभाव में सगोत्री का भी अधिकार बताया गया है।

उपनयन अर्थात् उप के साथ नयन अर्थात् लेकर जाना परब्रह्म के साथ संस्कार के उपनयन संस्कार कहते हैं।

यज्ञोपवित में मुख्य तीन धागे होते हैं । एक धागे में तीन तंतु इस प्रकार कुल नौ तंतु की यज्ञोपवित बनती है । इस तीन तंतु में नोदेवो का आह्वाहन स्थापन पूजन होता है । अनुक्रम में ॐकार, अग्नि, नाग, सोम (चंद्र), इन्द्र, प्रजापति, वायु, सूर्य विश्वदेव (पितृओ के अधिष्ठाता) इस प्रकार कुल नौ देवों का निवास होता है । ग्रन्थी (गांठ) में ब्रह्मा, विष्णु, शिव का आवाहन पूजन किया जाता है । इस प्रकार कुल १२ पर्वों का निवास यज्ञोपवित में होता है । इसीलिए उनकी मर्यादा उपरोक्त देवो को ध्यान में रखकर करनी चाहिए । यज्ञोपवित बदलने के समय देवो का आवाहन पूजन करके १० वार गायत्री मंत्र जप करके यज्ञोवीत धारण करना चाहिए ।

यज्ञोपवीत प्रतिवर्ष श्रावणी के दिन बदलनी चाहिए । चारो वेदो की अलग-अलग श्रावणी आती है । श्रावण की पूर्णिमा को यजुर्वेदी, अथर्ववेदी ब्राह्मणों को यज्ञोपवीत बदलनी चाहिए । सामवेदी ब्राह्मों की यज्ञोपवीत भाद्रपद की श्रावणी को बदर्ली चाहिए । इसके अलावां प्रतिचार महीने में यज्ञोपवीत बदलनी चाहिए । इसके अलावां स्मशान में जाने के बाद, शब के स्पर्श के बाद, रजस्वला के स्पर्श में, प्रसूता के स्पर्श में, जन्ममरण के सूतक में सूर्य-चन्द्र के ग्रहण में, यज्ञोपवीत टूट जाने में, एसे समय में यज्ञोपवीत जबतक न बदली जाय तब तक मौन रहना चाहिए । जीर्ण यज्ञोपवीत के जो देवता है उनका विसर्जन करके यज्ञोपवीत को जल में प्रवाहित करे या किसी वृक्ष पर लटका दे ।

ब्रह्मचारी तीन धागा की एक यज्ञोपवीत धारण करे । उत्तरी वस्त्र के अभाव में दो यज्ञोपवीत धारण

करना चाहिए । गृहस्थाश्रमी दो यज्ञोपवीत धारण करे उत्तरीय के अभाव में तीन यज्ञोपवीत धारण करे । यज्ञोपवीत की लम्बाई के विषय में निर्णय सिन्धु में कहा है कि नाभी पर्यन्त लम्बाई रखनी चाहिए। नाभि से नीचे या ऊपर तक रखने वाला दोष भाग होता है। याद रखना चाहिये कि नीचे नही होनी चाहिए। वशिष्ठ ऋषि ने कहा है कि नाभि से नीचे वाली यज्ञोपवीत आयुष्य क्षय करती है । नाभि से ऊपर तक की यज्ञोपवीत तप का नाश कतरी है । यज्ञोपवीत के विना भोजन या मल मूत्र त्याग करने वाले को आठ हजार गायत्री का जप करना जाहिए । यज्ञोपवीत में स्थित देवताओं की मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए । यज्ञोपवीत में चाभी बांधना या अन्य कोई वस्तु बांधना मर्यादा का उल्लंघन है । मलमूत्र त्याग के समय यज्ञोपवीत को दाहिने कान पर धारण करना चाहिए । पवित्र होकर कान से उतारकर यज्ञोपवीत को प्रणाम करना चाहिए । त्रिकाल संध्या तथा पूजा कर्म के प्रारंभ में यज्ञोपवीत का स्पर्श करके वंदन करना चाहिए । यज्ञोपवीत धारण करने से बल, बुद्धि, आयुष्य तथा सम्पति की वृद्धि होती है। साथ में परमपद की प्राप्ति होती है । यज्ञोपवीत संस्कार से द्विज बनते है । अर्थात् दूसरा जन्म कहा जायेगा । पूर्व जन्म जन्मान्तर का प्रायश्चित तथा इस जन्म के कर्म करने का अधिकार मिलता है । यज्ञोपवीत कपास के सूत से बनी होनी चाहिए । आजकल पोलिस्टर, पोलीथीन इत्यादि अनेक रासायनिक पदार्थो में से बनाई जाती है । जिस तरह पत्थर में भगवान नहीं होते लेकिन उसी पत्थर को मूर्तिरुप देने से तथा प्राणप्रतिष्ठा करने से वही पत्थर पूजने के योग्य हो जाता है। मात्र धागा पहनने से कुछ भी नहीं होता। उस यज्ञोपवीत में १२ देवताओं का आवाहन स्थापन करने से ब्रह्मसूत्र हो जाती है।

आवाहन करने की विधि: अक्षत के ऊपर या वस्त्र पर यज्ञोपवीत रखकर अधोनिर्दिष्ट मंत्र बोलकर अक्षत चढाना चाहिए।

प्रथमतन्तौ ॐ ओंकारमावाहयामि । द्वितीय तन्तौ ॐ अग्निमावाहयामि । तृतीय तन्तौ ॐ सवितारमा वाहयामि । चतुर्थ तन्तौ ॐ सोममावाहयामि । पञ्चम तन्तौ ॐ पितृना वाहयामि । षष्ठम तन्तौ ॐ प्रजापतिमवाहयामि । सप्तम् तन्तौ ॐ अनिलमावाहायामि । अष्टम तन्तौ ॐ सूर्यमावाहयामि । नवम तन्तौ ॐ विश्वान् देवानावाहयामि । प्रथम ग्रन्थौ ॐ ब्रह्मणेनमः ब्रह्माणमावाहायामि । द्रितीय ग्रन्थो ॐ विष्णवेनमः विष्णुमावाहयामि । तृतीय ग्रन्थौ ॐ रुद्रायनमः रुद्रमावाहयामि।

इति मंत्रेण देवाः यथास्थानं न्यसामि।

ॐ यज्ञोपवितं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्य शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

यह मंत्र बोलकर यज्ञोपवीत धारण करे।

जीर्ण यज्ञोपवीत के विसर्जन की विधि

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्मत्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

मलमूत्र त्याग के समय यज्ञोपवीत कान पर धारण करने का रहस्य १२ देवताओं को धारण करने की वात है । इसलिये १२ देवताओं के दोष का भागीदार नहीं बनता जो मल-मूत्र त्याग के समय कान पर जनोई धारण करता है।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा के सन्दर्भ में

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री की प्रेरणा से अमदावाद श्री नरनारायणदेव धार्मिक परीक्षा विभाग द्वारा आगामी परीक्षा २२-१२-२०१३ रविवार को यथास्थान केन्द्रो पर ली जायेगी । चालू वर्ष में बाल सत्संग तथा किशोर सत्संग इस तरह दो विभाग का नूतन अभ्यास क्रम के अनुसार परीक्षा होगी । परीक्षा में भाग लेने वालों की नामावली संचालक ३०-१०-१३ तक नीचे के पते पर प्रेषित करें।

श्री नरनारायणदेव धार्मिक शिक्षण विभाग
श्री स्वामिनारायण मंदिर,
कालुपुर, अमदावाद-३८०००१

अयोध्या मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से धर्मभक्ति यात्रिनिवास का उद्घाटन एवं ठाकुरजी का ९९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

संकलन : शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंत)

बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के चरण कमल से पवित्र तथा मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का ९९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव तथा नूतन-भव्य ''यात्रिक निवास'' का उद्घाटन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति की आज्ञा से अयोध्या मंदिर के महंत स्वा. स.गु. देवप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजीने सुंदर आयोजन करके आषाढ शुक्ल-४ ता. १२-७-१३ को अयोध्या मंदिर में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का वैदिक विधिसे प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों अभिषेक किया गया था । इसके बाद ''श्री धर्मभक्ति यात्रि निवास'' का मंगल उद्घाटन भी आषाढ शुक्ल-२ रथयात्रा के दिन प्रात: ८-३० बजे किया गया था, जिस में बड़ी संख्या में संत-हरिभक्त उपस्थित थे । इस प्रसंग पर ''श्री घनश्याम बालचरित्र'' की त्रिदिनात्मक कथा १०-७-१२ से १२-७-१३ तक की गयी थी । जिसके वक्ता शा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) थे । प.पू. बड़े महाराजश्री ने ग्रंथ का तथा वक्ता का पूजन करके कथा का मगंल प्रारंभ करवाया था । इस प्रसंग पर महंत स्वामी देवप्रसाददासजी के गुरुजी, स्वा. आत्मप्रकाशदासजी छपैया के महंत स्वामी, वडनगर के महंत स्वामीने नवनिर्मित निवास की सुविधाओ की प्रशंसा के साथ अयोध्या के महंत स्वामी की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी ।

इस कथा के प्रथम दिन के यजमान श्री कांतिभाई मावजीभाई विशराम खीमाणी परिवार बोल्टन (यु.के.) तथा सहयजमान श्री कांतिभाई केशरा भुडिया, तथा प.भ. सां.यो. शांताबा पाटणी तथा सा.यो. गीताबा विरमगाँव, सां.यो. रंजनबा, सां.यो. आनंदीबा तथा पाटोत्सव के यजमान ठक्कर बाबूलाल केशवलाल पाटडी की तरफ से प.भ. श्री करशनभाई राधवाणीने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । इस प्रसंग पर अमदावाद से पधारे हुये संदीपभाई चौकसी, भार्गव डी. पटेल, नरेशभाई भावसार, राजूभाई जादव, मुकेशबाई परमार, मुकेशभाई पटेल, राजेशभाई, धर्मेन्द्रभाई पटेल, प्रफुलभाई खरसाणी, जतीनभाई पटेल, हरगोवनभाई नारायणपुरा, दीपकभाई सोनी, मूलजी भगत, निलेश खरसाणी, रोहित पटेल तथा भावेश पटेल इत्यादि लोगों ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन किया था तथा मंदिर के सेवा में भाग लिये थे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री ने अद्यतन निवास को देखकर खूब प्रसन्न हुए थे । महंत स्वामी को हार्दिक आशीर्वाद भी दिये थे । ता. १२-७-१३ को कथा की पूर्णाहुति के बाद पाटोत्सव के यजमान प.भ. ठक्कर बाबूलाल परिवार तथा प.भ. करशनभाई ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था । स्वामी देवप्रसाददासजी को प.पू. महाराज प्रसन्नता का हार पहनाकर धोती ओढाये थे । स.गु. महंत आत्मप्रकाशदासजी तथा छपैया के महंत स्वामी का भी साल ओढाकर सम्मान किया गया था । सभा में स्वा.

जगतप्रकाशदासजीने तथा आत्मप्रकाशदासजीने महंत वासुदेवानंदजी एवं महंत नारायणवल्लभदासजी, स्वामी विश्ववल्लभदासजी इत्यादि संत अद्यतन सुविधाओं से युक्त यात्रिकों के रहने की व्यवस्था देखकर खूब प्रसन्नता व्यक्त किये थे, यजमानो की खूब प्रशंसा किये थे।

अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री ने अपनी अमृतवाणी द्वारा शुभाशीर्वाद में बताया कि, हमें यहाँ आने का खूब आनंद हुआ है। पहले इस मंदिर की स्थिति अच्छी नहीं थी। छपैया मंदिर से सामान आता था। जिससे यहाँ का निर्वाह होता था। आज इसकी प्रगति देखकर खूब आनंद हुआ है, ऐसी देखभाल सदा महंत स्वामी करते रहें ऐसी आज्ञा हम देते हैं। आज की मांग अच्छी सुविधा के लिये है। सभी के सहयोग से यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी निर्माण कार्य किया है। वे प्रसंशनीय कार्य किये है, उन्हें धन्यवाद देता हूँ। इसके साथ श्रीहरि जिस स्थान पर बैठकर कथा सुनते थे, वहाँ पर बैठकर हमने भी कथा श्रवण की है, जिसका हमें खूब आनंद है।

अन्त में करशनभाई राधवाणी तथा कथा के यजमान की प्रसंशा किये थे। आभार विधिमूली के पार्षद भरत भगतने किया था। अयोध्या मंदिर के सेवक भूपत भगत, सुष्ठकत भगत, और संदेश प्रसाद तिवारी, हितेश भगत, मूलजी भगतने खूब सेवा की थी। सभा संचालन वडनगर मंदिर के महंत स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था। इस प्रसंग पर अनेकों धाम से संत-महंत पधारे हुए थे। अमदावाद से ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा योगेश्वरदासजी तथा पार्षद बाबू भगत इस प्रसंग पर पधारे हुए थे।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री आगामी अयोध्या मंदिर का १०० वाँ शताब्दी महोत्सव धूमधाम से संपन्न हो ऐसी महंत स्वामी को प्रेरणा दिये थे। इस अवसर पर प.पू. बड़े महाराजश्री अयोध्या मंदिर में प्रत्यक्ष गौ का दान देकर भगवान को उस गाय के दूधका भोग लगे ऐसा कहा था और गौ पूजन किया था।

स.गु. गोपालानंद स्वामी की प्रागट्य भूमि टोरडा में आषाढी को तोलमाप में कम-वेसी

स.गु. गोपालानंद स्वामी की प्रागट्य की भूमि श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री गोपाललालजी हरिकृष्ण महाराज की उपस्थिति में टोरडा में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी आषाढी के दिन तोल माप हुआ था।

१. बाजरी - बाजरी का ४ कण अधिक।
२. मकाई बाजरी का ५० कण कम।
३. मग - बाजरी का ७ कण अधिक।
४. कपास बाजरी का ६ कण अधिक।
५. लाल माटी - बराबर।
६. काली माटी बाजरी का ६ कण कम।
७. चना बाजरी का २५ कम अधिक।
८. अडद बाजरी का १ कण अधिक।
९. डांगर बाजरी का ६ कण अधिक।
१०. रस कस बाजरी का १६ कण अधिक।
११. गेहूँ-बाजरी का ११ कण अधिक।

यहाँ के महंत स्वामी के बताये अनुसार आषाढी को माप-तोल की परंपरा ७० वर्ष से चल रही है। जिस में गाँव के सत्संगी अपने अनाज को लेकर आते हैं। भगवान के समक्ष रखा जाता है। सभी के सामने तोला जाता है। यहाँ माप कि. ग्रा. में नही बल्कि कण के आधार से तोला जाता है। इस तोल के आधार पर किसान अपनी दिशा निश्चित करके वहाँ पर बीज तोले है। इस तोल कार्य में हमंत स्वामी तथा संत पार्षद, हरिभक्त उपस्थित थे।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री नरनारायण के चरणकमल समीप शुभस्थान शहर अमदावाद से लिखावित आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज हरिकृष्ण महाराज स्वस्ति श्री इडरगढ महाशुभ स्थान स्थित मो. ब्राह्मण प्रतिपालक धर्मधुरंधर गांभीर्यवीर्य सत्यप्रतिज्ञापालक चतुर्दश विद्याप्रवीण नीतिशास्त्रो का सामदान विधिभेद निग्रहाद्युपाययुक्त अष्टादश राजव्यवहारादि राजनीति विचक्षण वेद वेदांग अष्टादश पुराण धर्मशास्त्र रहस्यदान युक्त हिंसा रहित वेदधर्मप्रर्तक हरिजन मुकुटमणि अनेक संसारी जीवो द्धारार्थ कृतावतार श्रीप्रत्पक्ष पुरुषोत्तम श्रीहरिकृष्णोपासना परायणांतः करणेषु श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री ६ महाराजश्री जवानसिंहजी नरदेवेषु अस्मत् चतुर्वेदोक्त जय स्वामिनारायण पूर्वका आशिषां राशयः समुल्ल संतु शपत्र भवदीयं कुशलमनुं दिनमेधसामानयाशास्यहे बीजुं लखवाकारण ए छे जे अत्रे श्रीजी महाराजना प्रतापथी क्षेमकुशल छे तमारी क्षेमकुशलता ना पत्र हमणां ना आव्या नथी माटे संभारीने लखवाने महानुभावानंद स्वामी कपडवन्ज में छे तथा मूली में सर्वे साधु सुखशाता वर्ते छे बीजुं भूमानंद स्वामि आदि साधु मंडल समस्त तथा देवानंद स्वामि आदि ब्रह्मचारी मंडल समस्तने अमारा जयश्री स्वामिनारायण केज्यो । बीजु काम काज लखज्यो जोतुं करतुं मंगावजो ।

सम्वत १९०३ आषाढ शुक्ल एकादशी के दिन लखो छे । साधु निर्गुणदासजी का जयश्री स्वामिनारायण वंचाववा तथा भूमानंद स्वामि आदिक सर्वे साधुने मारा जय स्वामिनारायण केवरावावा ।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा लिखाये गये इस पत्र को सभी के दर्शनार्थे श्री स्वामिनारायण म्युजियम हाल नं. ११ में रखा गया है । सभी भक्तगण दर्शन का लाभ अवश्य ले ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियममें भाद्रपद-४ को गणेश चतुर्थी का उत्सव मनाया जायेगा

गणपति पूजन के लिये यजमानपद हेतु ११००/- भरकर लाभ लिया जा सकता है । स्थान कम है इसलिये जो पहले वह पहले इसका ध्यान रखकर नाम लिखवाये ।

मो. : ९९२५०४२६८६ - लेन्ड लाईन : ०७९-२७४८४५९९

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जुलाई-२०१३

रु.९४,९२०/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम।
रु.६०,०००/-	महेशभाई एस. पटेल (लालोडावाला) २०१३ जुलाई से २०१४ तक प्रति महीने ५००/- के हिसाब से।
रु.२५,०००/-	कानजी वालजी वेकरीया (कच्छ)
रु.२५,०००/-	जगदीशभाई के. दरजी (बोपल) प्रतिमास १०००/- के हिसाब से १५ महिने तक।
रु.११,०००/-	विकल्पभाई धीरजभाई (अमदावाद) जन्म दिन निमित्त
रु.११,०००/-	दिनेशभाई कांतिभाई पटेल - नूतन बंगला में महापूजा हेतु।
रु.११,०००/-	विकल्पभाई धीरजभाई।
रु.५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी (बोपल) (घनश्याम इन्जिनियरिंग)
रु.२,४५,०००/-	अ.नि. गजानंदभाई जादव परिवार वती राजूभाई गजानंद जादव हो लनं. ८ में श्रीजी महाराज के हस्ताक्षर की फ्रेम तथा उसमे डायमंड लगवाने की सेवा करवाये।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जुलाई-२०१३)

ता. १२-७-१३ को अ.नि. भानुभाई नानजीभाई पटेल (अमदावाद) कृते चंपाबहन, सुखदेव, वासुदेव।

ता. १३-७-१३ सत्संग समाज बिलिया सिध्धपुर कृते चन्द्रप्रकाश स्वामी।

ता. १४-७-१३ प्रातः देवर्षिभाई मुकेशभाई ठक्कर (यु.एस.ए.) कृते माधव स्वामी, हरिॐ स्वामी।

ता. १४-७-१३ सायंकाल छपैयाधाम बायर (यु.एस.ए.) कृते नवीनभाई, मनीषभाई

ता. १७-७-१३ देवेन्द्रभाई नरसिंहभाई कोडिया (बोपल) कृते शा.धर्मवल्लभदासजी तता ऋषिराज परीक्षित।

ता. ३०-७-१३ अ.नि. कानजीभाई भीमजीभाई राधवाणी (बलदिया-कच्छ) कृते करशनभाई के. राधवाणी।

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी
(गांधीनगर)

अपने इग्यारह नियम

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

"निर्विकल्प उत्तम अति निश्चय तब घनश्याम"

अपने देश के विदेश के हजारो मंदिरो में संध्या आरती प्रार्थना में नित्य गाया जाने वाला प्रेमानंद स्वामी द्वारा रचित पद, जिस में ११ नियम बताये गये है, उस में से विगत अंक में प्रकाशित किये गये जिन्हे आप सभी पढे होंगे, और अच्छा लगा होगा । अब उसके आगे का प्रस्तुत कर रहेहै।

"मांस न खावत मदय कुं पीवत नहि बड़ भाग्य ।
विधवा को स्पर्शत नहीं, करत न आत्मघात ॥"

तसीर नियम है : "मांस न खावत"

कितनी बार लोगों को शंका होती है, कितने हिन्दू तो इस विचार से अपरिचित रहते हैं । वे कभी मांस भक्षण नहीं करते । तो उन्हे इस नियम में क्यो समाविष्ट किया जाता है ? इस समय का वातावरण अलग है, प्रायः सभी को इसका ज्ञान हैं । प्रातः अनेक समाचार पत्रों में अंडे का प्रचार आता रहता है । कितने लोग संतो के पास इसका प्रश्न लेकर आते हैं ।अंडा किस में गिना जाय । लेकिन यह मांस ही है । इस में कोई शंका का स्थान नहीं है । इसका प्रश्न न करके मुर्गी से यह प्रश्न करना चाहिये कि तूं अंडे को क्या मानती है । कितने लोग अंडाको दूधके समान मानते है । यह उनकी भूल है ।जब गाय को दूहा जाता है । तब गाय को उसके दूधपर ममत्व नहीं होता । वह बड़े प्रेम से बर्तन भरकर लेजाने देती है । जब कि मुर्गी जब अंडा देती है तब उसके पास आप जाकर देखो, जितना संभव होगा उनता प्रतिकार करेगी । मुर्गी को ऐसा होता है कि यह मेरा बच्चा है । इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि वह मांस ही है । उसमें जीव है । इसी लिये भगवान स्वामिनारायण ने युवा पीढी को जागरुक करने के लिये चेतावनी देते हुये कहा कि ''मांस न खावत'' यह तीसरा नियम है । किसी भी वस्तु में प्राणी के मांस का उपयोग किया गया हो तो उसका भी परित्याग करना चाहिये । स्वामिनारायण भगवान ने सत्संगिजीवन में उपरिचर वसु राजाकी बात की है । उनके पास इतना पुण्य था कि वे सदेह स्वर्गजासकते थे । लोक में कहावत है कि ''आप मूआ सिवाय स्वर्ग जाना सम्भव नहीं है । लेकिन वह मरे विना सशरीर स्वर्ग जाता था । इतना पुण्यशाली था देवता लोगो में तथा महर्षियों में एकबार चर्चा चल रही थी । जिस में मांस खाने पर विचार चल रहा था । उपरिचर तथा इन्द्र में मित्रता थी । इन्द्र को खराब न लगे इसलिये सत्यवचन कहने में संकोच कर रहे थे । यह भी सही, वह भी सही । उस तरह का उच्चारण कते ही पुण्यक्षय होने से धरती पर आ गिरे । स्वामिनारायण भगवानने तीसरे नीयम में सावधानी की बात की है – कि हमारे आश्रित किसी भी संयोग में मांस भक्षण न करें ।

चौथा नियम है : "मद्य को पीवत नहिं बड़ भाग्य"

इसका मतलब है कि मदिरा का पान भगवान के भक्तों को कभी नहीं करना चाहिये । कहीं कही कमनशावाली भी मदिरा मिलती है । लेकिन मदिरा तो मदिरा होती है । मनुष्य मदिरा पान के बाद इतना परेशान हो जाता है कि उतना परेशान तो यमपुरी में भी नहीं होगा । ऐसी जानकारी मिलती है कि मदिरापान

करने वाला कितना परेशान होता है । बिना मोत के मरजाता है। फिर भी इसकी आदत कोई छोड़ता नहीं है। इसी लिये अपने शास्त्र वारंबार कहते है कि ''मदिरा - मांस'' कभी नहीं खाना चाहिये।

पुराण में ऐसी कथा आती है कि देवता तथा दैत्य साथ मिलकर समुद्र मन्थन किये। जिस में से मदिरा भी निकली । मदिरा को असुरों ने ले लिया । देवता उसे स्वीकार नहीं किये । यह एक प्रमाण है कि मदिरा किसे अच्छी लगती है। किसे नहीं अच्छी लगती किसी को यह खराब लगेगा कि हम असुर है और वे देवता है । ऐसा नहीं, आप सज्जन है, लेकिन जब पी लेते है तो आप का स्वभाव असुर जैसा हो जाता है । यह वात विचारने लायक है इससे स्पष्ट होता है कि मदिरा सात्विक वृत्तिवाले को तामसवृत्ति में परिवर्तित कर देती है। आज लाको रुपये खर्च करके शराब बन्दी का निषेधकिया जाता है। लेकिन स्वामिनारायण भगवानने पहले से ही अनपे आश्रितो को देव जैसा जीवन जीने को बताया है।

यहाँ पर मद्य का विस्तार पूर्वक अर्थ ऐसा है कि किसी प्रकार के मादक द्रव्य का उपयोग नहीं करना चाहिए।

पांचवा नियम है : "विधवा को स्पर्शत नही"

विधवा स्त्री का स्पर्श नहीं करना चाहिये। इस में एक धर्म की मर्यादा है । ब्रह्मचर्य की शुद्धि होती है । आगे जीवन शुद्ध होता है।

शिक्षापत्री श्लोक १६४ में श्रीहरि की आज्ञा है कि विधवा स्त्री अपने सम्बन्धी के सिवाय अन्य का स्पर्श न करें । अपनी युवा अवस्था का ख्याल रखकर सगे सम्बन्धी के विना युवान पुरुष से कभी वात न करे।

इतनी वात का ध्यान रखने पर विधवा स्त्री अपने धर्म में रह सकती है। इसी लिये महाराज ने आज्ञा की है कि भगवान में पति की बुद्धी रखकर विधवा स्त्री प्रभु की सेवा करे । इससे उसका जीवन संमान के साथ बीत जायेगा। इस आज्ञा में उच्च भावना समाई हुई है। इग्यार प्रकार के नियम में ''विधवा को स्पर्शत नही'' यह पांचवां नियम है।

छठ्ठा नियम है : "करत न आत्मघात"

भगवान के भक्त कभी भी किसी संयोगमें आत्मघात् न करें। चाहे कितनी बड़ी आपत्ति आजाय, चाहे जितना भी खराब काम हो गया हो तो भी मानसिक उद्वेग में आकर कि अब हम किसी को क्या मुह दिखायेगे इसलिये आत्महत्या करलें, यह कभी नहीं करना चाहिये।

मानव छोटी छोटी बात में भी आत्महत्या कर लेता है। परीक्षा में अच्छा परिणाम न आने पर रेलवे के नीचे कूद जाता है। अरे भाई ! करोडो की कीमत की यह शरीर है, भगवान ने कृपा करके यह मानव शरीर दिया है। इसकी हत्या करलेना कितना उचित है । इससे बड़ा कोई पाप नहीं है। इसलिये कभी आत्मघात नहीं करना चाहिये।

संसार में ऐसी कहावत है कि ''तीर्थ में जाकर मरने से मोक्ष मिलता है । जिस में सर्वप्रथम स्थान काशीका है। काशी का मरना और सूरत का जिमना'' यह कहावत है। ऐसी अंधश्रध्धा से भी आत्मघात नहीं करना चाहिये । यदि ऐसा होता तो सभी पापी काशी करवत में जाकर अंतिम समय में करवत चलवालेते । सभी कैलासवासी हो जाय । भगवत् भजन-भक्ति कीर्तन स्मरण के विना जीव का कल्याण संभव नहीं है । इसलिये किसी भी संयोग में आत्मघात नहीं करना चाहिये।

(इग्यारह नियम में से ६ नियम हो गये - अवशिष्ट आगामी अंक में)

●

महाराज का बड़ा प्रताप

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

आज तो गोपालानंद स्वामी पत्र लिखने बैठे है । गोपालानंद स्वामी का तथा महाराज का बड़ा गहरा सम्बन्धथा । यह बात सभी जानते । ''योगी पूर्वजन्मना जेने वहाला सगाथे वहाल'' फिर भी अलौकिकलीला करने की इच्छा से गोपालानंद स्वामी भक्तों की विनती पर पत्र लिखने बैठे है । कितने चरित्र महापुरुषों के

अवर्णनीय होते है। गोपालानंद स्वामी की महिमा ऐश्वर्य, प्रताप, प्रभाव, सभी को पता था। इसीलिये भक्त स्वामी के पास आये। उस समय स्वामी वडताल में थे। अपने आसन पर बैठे थे। वर्षा की ऋतु थी। लेकिन वर्षा नहीं हो रही थी। पानी और प्रकाश ये दोनो ठाकुरजी की भेंट है। भगवान की इच्छा से सब होता है।

मद् भयाद् वातिवातोऽयंसूर्यस्तपतिमद् भयात्।
वर्षतीन्द्रो दहत्यग्निः मृत्युश्चरतिमद् भयात्॥

लेकिन समर्थ संत गोपालानंद स्वामी को इच्छा हो तो वरसात कराते थे। यह प्रताप जानकर हरिभक्त वडताल में गोपालानंद स्वामी के पास गये और कहने लगे कि स्वामी ! इस समय सर्वत्र सूखा पड़ गया है - सब फसल सूख रही है। स्वामी ने निश्चित किया कि इस कार्य में तो सभी लोग ईश्वर को भूल जायेंगे। गोपालानंद स्वामीने तुरतं कहा कि आइये महाराज को पत्र लिखते हैं। ऐसा कहकर वे पत्र लिखते हैं। ऐसा कहकर वे पत्र लिखने लगते हैं। काशीदास भक्त को वह पत्र देकर कहते हैं कि जाकर गढडा में महाराज को देना। भक्त गढडा पहुंचा। महाराज सभा में विराजमान थे। भगवान को प्रणाम करके पत्र चरण में रख दिया। महाराज ने पत्र पढा। बाद में कहे कि चलिये घेला में स्नान करने। सभी को बडा आश्चर्य हुआ। सभी कहने लगे, महाराज घेला में एक बूंद ब्यानी नहीं है। कहाँ स्नान करेंगे। सभी को संशय हो गया। महाराज ने सभी को आज्ञा की इसलिये सभी तैयार हो गये। संत-हरिभक्त सभी साथ चल दिये। सभी घेला के किनारे खडे रहे इतने में इतने जोरोंसे वरसात हुआ कि सभी भीग गये, महाराज की छत्र भी टूट गया। घेला दोनो किनारों से बहने लगी।

गोपालानंद स्वामी का पत्र वांचने के बाद पत्र को स्वीकार करके अलौकिक लीला किये। नदी में पानी तो आया लेकिन तुरंत का पानी होने से गंदा है, इसमें स्नान नहीं कर सकते, इन्द्रने स्नान करा दिया।

सज्जनो ! समर्थ गुरु की शरण में नहीं भाग्य का कोई जोश, भाग देखो जगत के जीव के उन में है नरक के दोष मनुष्य के जीवन में चाहे कितना भी सुख-दुःख लिखा हो, लेकिन गोपालानंद स्वामी जैसे संत के पास जाने से उसके सभी दुःख दूर हो जाते है। भगवान तक प्रार्थना पहुंचाने का कार्य संत पुरुष करते हैं। सच्चे संत भगवान की पहचान कराते हैं। भगवान के साथ जोड़ने का कार्य करते हैं। जिसके हृदय में परमात्मा बिराजमान हो ऐसे समर्थ संत ही तार सकते है। परंतु यह सब कुछ भगवान ही करते हैं। भगवान की ईच्छा से होता है। यह मानकर भगवान की भजन करनी चाहिये। भगवान ऐसे भक्त की मनोकामना पूर्ण करते है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वे प्रागट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष्य में श्री नरनारायणदेव युवक मडंल द्वारा श्री स्वामिनारायण अंक के आजीवन सदस्य

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मासिक आजीवन ११४१ सदस्य बनाये जायेगें, जिस में कुछ सदस्य बन चुके है। जिस के प्रेरक स.गु.स्वा. देवप्रकाशदासजी, स.गु. स्वा. पी.पी. स्वामी - नारायणघाट के महंत तथा स्वा. जे.के स्वामी (कोठारी अमदावाद) थे।

४१	सदस्य बनाने वाले प.भ. चन्द्रशभाई जशुभाई पटेल (आकरुंद-बायड)
११४	सदस्य बनाने वाले श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, विसनगर।
१०४	सदस्य बनाने वाले श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, बापुनगर।
१४	सदस्य बनाने वाले श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, नारायणघाट।
२७	सदस्य बनाने वाले श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, साबरमती।

अंक के सदस्य बनाने का कार्यक्रम गाँव-गाँव, शहर-शहर में चल रहा है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडन-लंडन श्री घनश्याम महाराज का रजत जयंती महोत्सव ।

॥ શ્રી સ્વામિનારાયણો વિજયતેતરામ્ ॥

અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ
પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર (આઈ.એસ.એસ.ઓ.) - મેરીલેન્ડ ડી.સી. એરીયા

Shree Swaminarayan Temple - Maryland - D.C. Area (I.S.S.O.)

Kalupur Dham

મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવ

શ્રીમદ્ ભાગવત સપ્તાહ જ્ઞાનયજ્ઞ

:: Start ::
26 Aug. 2013
Monday

:: Conclude ::
1 Sept. 2013
Sunday

International Swaminarayan Satsang Organization
(Under Shree Narnarayan Dev Gadi - Ahmedabad)

Shree Swaminarayan Temple

Maryland D.C. Area 115 COCKEYS MILL ROAD
REISTERSTOWN MD 21136
Temple Phone - (410) 526-1008
Email. : issomddc@gmail.com

સર્વાવતારી ભગવાનશ્રી સ્વામિનારાયણ ની અસીમકૃપાથી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠાધિપતિ પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય મહારાજ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.અ.સૌ. ગાદીવાળાશ્રીના શુભાશિર્વાદ અને પ.પૂ. મોટા આચાર્ય શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા પ.પૂ.અ.સૌ. મોટા ગાદીવાળાશ્રી તથા પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી ના સંકલ્પ, પ્રેરણા થકી તથા સમગ્ર સંત સમાજનાં હૃદયાત્મક આશીર્વાદથી મેરીલેન્ડ - ડી.સી. ઈન્ટરનેશનલ શ્રી સ્વામિનારાયણ સત્સંગ ઓર્ગેનાઈઝેશન (ઈ.જી.જી.) દ્વારા નવનિર્મિત શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં શ્રી ઘનશ્યામ મહારાજ, શ્રી રાધાકૃષ્ણદેવ, શ્રી નરનારાયણદેવ, શ્રી લક્ષ્મીનારાયણદેવ, શ્રી રામ લક્ષ્મણ જાનકી, શ્રી સૂર્યનારાયણદેવ, શ્રી શિવ પાર્વતીજી તથા શ્રી ગણપતિજી અને શ્રી હનુમાનજીની મૂર્તિ પ્રાણ પ્રતિષ્ઠા શાસ્ત્રોક્ત મંત્રોચ્ચાર સાથે શ્રી હરિના સાતમાં વંશજ પ.પૂ.ધ.ધુ. ૧૦૦૮ આચાર્ય મહારાજ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના શુભ વરદ્ હસ્તે સંવત ૨૦૬૯ શ્રાવણ વદ-૬ ને તા. ૨૬ ઓગસ્ટ ૨૦૧૩, સોમવાર ના રોજ થી શ્રાવણ વદ-૧૧ તા. ૧ સપ્ટેમ્બર ૨૦૧૩, રવિવાર સુધી નિર્ધારિલ છે. આ પ્રસંગે શ્રીમદ્ ભાગવત સપ્તાહ જ્ઞાનયજ્ઞનું આયોજન કરેલ છે. જેની વ્યાસપીઠે વક્તા ભાગવતાચાર્ય શ્રી યોગેન્દ્રભાઈ ભટ્ટ (પીજવાળા) બિરાજી તેમની અમૃતવાણીનું રસપાન કરાવશે. આ પ્રસંગે પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી સંત મંડળ સહિત પધારશે. આ પ્રસંગે દેશ-વિદેશના સત્સંગીઓના સહિયારા યોગદાન થી સાકાર થયેલ આ મંદિરમાં મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠાના સ્મરણીય પ્રસંગે આપ સૌને સહપરિવાર મિત્ર મંડળ સહિત પધારવા ભાવભીનું આમંત્રણ પાઠવીએ છીએ.

લી.

ટેમ્પલ કમિટિ તથા સમસ્ત સત્સંગ સમાજ

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - મેરીલેન્ડ - ડી.સી., એરીયા

મંગલ કાર્યક્રમની રૂપરેખા

26 August 2013, Monday

પોથીયાત્રા :- 4-00 pm to 5-00 pm ※ કથા :- 5-00 pm to 7-00 pm

27 August 2013, Tuesday

※ કથા :- 5-00 pm to 7-00 pm

28 August 2013, Wednesday

કથા :- 5-00 pm to 7-00 pm ※ શ્રી કૃષ્ણ જન્મોત્સવ :- 12-00 pm

29 August 2013, Thursday

※ કથા :- 5-00 pm to 7-00 pm

30 August 2013, Friday

※ યજ્ઞ પ્રારંભ :- 8-30 am

કથા :- 5-00 pm to 7-00 pm ※ શ્રી રૂકમણી વિવાહ :- 7-00 pm to 8-00 pm

31 August 2013, Saturday

કથા	:- 9-00 am to 11-00 am
મુખ્ય પ્રવેશદ્વાર ઉદ્ઘાટન	:- 4-30 pm
કથા	:- 5-00 pm to 7-00 pm
શોભાયાત્રા	:- 3-30 pm, Dunkin Donuts, 48 Main Street, Reisterstow MD થી નિકળી 4-30 pm મંદિર પહોંચશે.

01 September 2013, Sunday

મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા તથા અભિષેક	:- ૮-૦૦ કલ	પ્રાસંગિક સભા	:- 10-30 am
વિષ્ણુયાગ પૂર્ણાહુતિ	:- 9-30 am	અન્નકુટ આરતી	:- 12-00 pm
કથા પૂર્ણાહુતિ	:- 10-00 am	મહાપ્રસાદ	:- 1-00 pm

નોંધ :- દરરોજ કથા બાદ મહાપ્રસાદની વ્યવસ્થા રાખેલ છે.

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "परमात्मा की भक्ति किस तरह करनी चाहिए" एटलान्टा (आई.एस.एस.ओ. मंदिर- यु.एस.ए.)

(संकलन : राजेश्रीबहन उ. पटेल तथा रागेश्रीबहन डी. पटेल - एटलान्टा)

हम सत्संग तथा भक्ति में परोपकार की भावना रखकर मान-अभिमान का त्याग कर सत्संग करेंगे तो निश्चित ही जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति मिलजायेगी।

प्रिय भक्तो ! श्रीजी महाराज बहुत दयालु है। यह पृथ्वी मोक्ष का साधन है। यहाँ सभी को जन्म देकर मोक्ष का द्वार खोल दिया है। इसलिये हमें निष्कामभाव से निष्ठापूर्वक कर्म करके तीन साधनो से (कर्म, ज्ञान, भक्ति) भक्ति करनी चाहिए। यदि यह निष्काम भाव से की जाय तो भगवान के सुख की प्राप्ति अवश्य होगी।

भगवान की मूर्ति को हृदय में धारण करके, भगवानने जो धर्म मर्यादा स्थापित किया है उसमें निश्चय करके दर्शन की अखंड स्मृति रखकर जब तक शरीर है तब तक उसका पालन करते रहने से निश्चित उसका कल्याण होगा । देवता लोग भी इस धरती पर जन्मधारण करने की इच्छा करते हैं। इसका कारण यह है कि उत्तम कर्म करने का आधार पृथ्वी है, अन्यत्र कहीं नहीं।

जीव के कल्याण के लिये तीन अंग बताया गया है, वही सुख का कारण है। प्रथम तो यह कि आत्मनिष्ठा से परमेश्वर की भजन करनी चाहिये। दूसरा - पतिव्रता स्त्री की तरह भगवान में पति के भाव से भजन करना, तीसरा - दासपना जिस तरह उद्धवजी एवं हनुमानजी दास भाव से भजन करते थे उस तरह से भजन करना चाहिए। इसके अलांवा मोक्ष का कोई अन्य उपाय नहीं है। चाहे मनुष्य जितना भी ज्ञानी हो धर्म या विवेक न होतो उसके अन्त समय में वह काम नही आता। जो विवेकी मनुष्य हैं वे गमनागमन के चक्कर को समझते है वे परमात्मा की प्राप्रित के लिये निरन्तर सतर्क होकर सत्संग करते रहते हैं। इसलिये वे प्रभु की शरणागति स्वीकार करके भवसागर पार कर जाते हैं।

संसार में रहकर पवित्रता कैसे जीवन में मिले उसके लिये इन्द्रियों की पवित्रता मुख्य हैं। जिस में आंखो से अच्छा देखना, कान से अच्छा सुनना, नाक से अच्छी सुगंधलेना, मुख से अच्छा बोलना, इस तरह सभी ईन्द्रियो पर संयम रखकर वर्तन करना चाहिये और हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना चाहिए। कुसंगी सुखी हो, सत्संगी दुःखी रहे - इसी तरह प्रभु सम्पति दें तो अच्छा न दे तो भी अच्छा भगवान जैसा रखे उसी में प्रसन्न रखना चाहिए। श्रीजी महाराज तो ज्ञान तथा गुणों के सागर है। उनकी शरण में जायेंगे तो सभी सुख मिलेगा और सभी मनोरथ पूर्ण होंगे, खराब बुद्धि दूर होगी, अच्छी बुद्धि आयेगी। प्रभु को समक्ष रखेंगे तो चारो तरफ प्रकाश दिखाई देगा । भजन-भक्ति से जन्मजन्मातर के पाप कटेंगे और दुःख दूर होंगे। अक्षरधाम की प्राप्ति होगी।

भवान हमें जिस परिस्थिति में रखते है उसी में अच्छा संकेत दिखाई देता है। इसलिये श्रीजी महाराज के चरण में ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु आपकी भजन-भक्ति या सत्संग में जो बाधारुप हैं उनसे हमारी रक्षा करें, जिससे हम आपकी शरणागति में आगे बढते रहें। श्रीजी महाराज पृथ्वी पर मनुष्य रुप देकर हम सभी की परीक्षा की है। उसमें पास होने के लिये सदा भगवान की भक्ति करते रहना चाहिए। शिक्षापत्री २०६

श्लोक में बताया गया है कि हमारे आश्रित पुरुष या स्त्री हों, सभी शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करेंगे तो धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होगी। इसके अलांवा क्षमा करना, भूलजाना, दिल विशाल रखना, दूसरे के पास अपेक्षा नहीं रखना, मान-संमान से दूर रहना इत्यादि का सदा ध्यान रखने वाला गृहस्थी सदा सुखी होता है। गृहस्थियों को एक विशेष नियम बताये है कि एक निश्चित समय पर ५ मिनट बैठकर प्रभु का ध्यान करना, शारीरिक क्रिया करे, भक्ति करे, कुटुम्ब में एक संप के साथ रहे, बालकों को सत्संग की तरफ प्रेरित करे, प्रभु भजन करावे, मा-बाप की सेवा करे, इत्यादि से जीवन से सुख - शान्ति मिलेगी। भगवान के चरणों में प्रार्थना करते हुए रात-दिन भगवान की भजन भक्ति करनी चाहिए।

इस पृथ्वी पर अपना जन्म हुआ इसमें आकर भक्ति का योग कर लेना चाहिए। यह धरती ही स्वर्ग को देने वाली है, मोक्ष को देने वाली है। पुण्य-सुख सभी भगवान के चरण में समाया हुआ है।

संसार के सुख प्राप्त करने की चाहना वाले छोटे से बड़े सभी सत्संगियो के गुण को ग्रहण करें। इससे महाराज प्रसन्न होंगे। इस तरह के आशीर्वाद देते हुये कहीं कि एक पुरुष को भक्ति करने वाली पत्नी मिली तो पतिके साथ सारा परिवार भक्त हो गया। दूसरे की पत्नी वैराग्यवाली मिली तो पति को संसार का सुख नही मिला, तीसरे की पत्नी झगडालूं मिली तो घर का सारावातावरण नर्क हो गया। प्रत्येक परिस्थितियों में समान भाव आवे ऐसी भगवान के चरणों में प्रार्थना करनी चाहिए। सुख-दुःख तो भगवान इसलिये देते है कि आप सावधान होकर जीव के कल्याण हेतु भजन-भक्ति में मन लगे।

अन्त में कीर्तन गाकर - वाणी द्वारा भगवान को अंतर में उतारकर, सन्ध्या आरती करके सभी बहनें महाप्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव कीं। इस तरह बड़ी संख्या में बहने सत्संग का लाभ लेती रहें ऐसा सभी को आशीर्वाद दी थी।

•

सुख तथा दुःख

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

दिन और रात की तरह सुख और दुःख जीवन में आते रहते है। इसलिये सुख में संयम रखना चाहिये। दुःख में धैर्य रखना चाहिए। ''सबदिन होत न एक समान'' सुख-दुःख तो आता रहता है। आज भले ही दुःख का दावानल सुलग रहा हो कल निश्चित ही सुख-शान्ति की शीतल वर्षा होगी। दूसरे के से देखकर सुखी होना, दूसरे के दुःख को देखकर दुःखी होना, इससे बड़ा कोई दूसरा सुख नही है। जो दूसरों की सुखी करना चाहता है उससे बड़ा कोई सुख नही है। परम कृपालु परमात्मा जिस स्थिति में रखें उसी में संतोष मानने वाले जैसा कोई सुखी अन्य नहीं है।

''भौतिक सुखनी भ्रमता ओमां जीव चढ्यो चकडोले ।

सांसारिक सुखना हिंडोले तनने रोज हिंचोडे ॥

भक्ति ही जीवन का पाथेय है। इसलिये आत्मानंद प्राप्ति के लिये निरंतर भगवत् पारायण होकर महापुरुषार्थ करना चाहिये। अधिक खाने की अपेक्षा जितना भोजन पच जाय उतना खाने से शरीर पुष्ट होता है। इसी तरह बहुत कमाने से नहीं बल्कि थोड़ा बचाने से समृद्धि होती है।

भौतिक सुख प्राप्त करके मनुष्य अपना शाश्वत सुख गुमा देता है। जिस सुख में अभिमान मिलता है वह भी सुख को खत्म कर देता है। जिस तरह सम्पत्ति में बढत होने लगती है उसी तरह अन्दर की गरीबी बढने लगती है। स्वयं को तृप्ति का अनुभव नहीं होता असंतोष ही दिखाई देता है। स्थूल सम्पत्ति कदापि सुख-शांति नहीं दे सकती। सुख का संबंध- साधन, सामग्री, सम्पत्ति के साथ जितना है उससे कहीं अधिक मन के विचारों से है। तन,

मन, धन से कोई भाग्य शाली ही सुखी होता है । गीताकार ने नरक के तीन द्वारा बताये हैं । प्रथम काम दूसरा क्रोध, तीसरा लोभ ! शांति जीवन के लिये मोर मुकुट है। शांत एवं स्थिर चित्त द्वारा ही अखंड आनंद की अनुभूति होती है । कईबार आपत्ति भी आशीर्वाद रुप होती है।

''आवे प्राणी एकलो, जाय एकलो आप ।
साथ पुत्र-परिवार नहि साथ पुण्यने पाप ॥

सच्चा सुख पुत्र - परिवार में नहीं है, सच्चा सुख खाने पीने में नहीं है खिलाने में है । सच्चा सुख तो भगवान की भक्ति में है, भगवान की शरणागति में है। कर्तव्य पालन, धर्मपालन, त्याग, दान, सेवा तथा भगवान की शरण में है । परमात्मा सुख-शांति के अगाधसागर है उनमें तन्मय होने से सुख-शांति का प्रवाह बह पड़ता है। लाखो स्त्री-पुरुष चिंता में डूबे हुए दिखाई देते है। सुख-शांति के लिये मन में तथा शरीर से परेशान होकर इधर उधर भटकते रहते हैं । कारण यह कि जहाँ जो नहीं है वहाँ उसे खोजने का प्रयास करता है। इसीलिये सच्चा सुख नहीं मिलता। सच्चा सुख प्राप्त करने के लिये मनुष्य के हृदय में विराजमान परमात्मा हैं । व्यक्ति के भीतर विद्यमान जो परमातमा है उन्हें नही खोजता इधर-उधर भटकता रहता है । सच्चा सुख भगवान की शरणागति में है, सत्पुरुषों के संबंन्धमें है। परमात्मा के साथ ऐक्य रखने से सच्चा सुख मिलता है।

मनुष्य दुःखी इसलिए है कि भगवान को भूलता जा रहा है। प्रभु का उपकार भूला है। जो ईश्वर को भूलता है वह कभी सुखी नहीं होता। सुख प्राप्त करने के लिये आज के युग में सभी लोग इन्द्रियों के सुख को सच्चा सुखमान लिया है । सुख प्राप्ति के लिये कपट तथा असत्य का द्रावण कता है। सदाचार को छोड़दिया है। उसे मन की शांति क विना सभी मृगजल जैसा लगता है । मानव आन्तरिक शांति खोदिया है । मनुष्य आधि, व्याधि, उपाधियों से घिर गया है। इस दुःख से दूर होने के लिये कलियुग में भगवान श्री स्वामिनारायण की शरणागति स्वीकार करने के लिये प्रथम प.पू. गादीवालाजी से कंठ में कंठी धारण करके पंचवर्तमान पालन करते हुए भजन-भक्ति करनी पड़ेगी । प्रतिदिन भगवान की पूजा करना तथा प्रतिदिन मंदिर में जाना पड़ेगा । मंदिर में जाकर सत्संग-भक्ति करना। प्रतिदिन अनुकूल न हो तो अवकाश के दिन अवश्य जाना चाहिए । इसके साथ पूजन कृष्णजन्माष्टमी, रामनवमी, नूतन वर्ष इत्यादिपर्वो पर ही अवश्य जाना चाहिए । इससे वह व्यक्ति आधि, उपाधि, व्याधिइत्यादि से रहित हो जायेगा और सुख की प्राप्ति होगी।

कलियुग में तात्कालिक दुःख को दूर करना हो तो घूमते फिरते खाते पीते, नहाते-धोते, उठते-बैठते, शुभक्रिया में अशुभाक्रिया में स्वामिनारायण महामंत्र का अखंड जप करना चाहिये । क्योंकि सहपुत्र में तप करतने से, त्रेतायुग में यज्ञ करने से, द्वापर में सेवा करने से कलियुग में स्वामिनारायण महामंत्र जप करने से भगवान प्रसन्न होते है । इस विषय में भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में तथा वचनामृत में आज्ञा की है। जिस में, ब्रह्मचारी, साधु, आचार्य महाराजश्री, गृहस्थ स्त्री-पुरुष को शिक्षापत्री एवं वचनामृत की आज्ञानुसार व्यवहार करने की आज्ञा की है । जिस में प्रतिदिन पाठ करने से जीवन में उतारने से, आज्ञा का पालन करने से सुखी होना संभव है। जो आज्ञा का लोप करेंगे वे दुःखी होंगे। ऐसी आज्ञा भगवान की सार्वत्रिक है। वचनामृत ज्ञान से भरपूर है। सर्वशास्त्र का सार है। इसलिये प्रतिदिन वचनामृत का पाठ करना चाहिए । आज्ञा को जीवन में उतारने से धर्मज्ञान, वैराग्य, भक्ति, दृढ तोही है। शाश्वत, सुख की प्राप्ति प्रभु की आज्ञा में है। इससे भौतिक तथा सांसारिक सुख से निवृत्ति होती है। सच्चा सुख मिलता है। अखंड प्रभु का स्मरण बना रहता है। भगवान की आज्ञा का पालन करने मे सुख है, लोप करने में दुःख है।

भाभी ने पकड़ लिया

– जानकी नीकीकुमार पटेल (घाटलोडिया)

जगत में दो वस्तु ऐसी है जो बांटने से बढती है। वह दो वस्तु कौन है ? एक आनंद, दूसरा ज्ञान।

रमणीय तथा दिव्य भूमि छपैयाधाम का स्मरण करते ही हृदय में आनंद व्याप्त हो जाता है। छपैयाधाम अर्थात् साक्षात् अक्षरधाम। रमणीय वृक्षो से आच्छदिन बनराई, जल से लहराती तालाब, हरिगुण गाने वाले पक्षी, जहाँ की शोभा बढाते हैं। मुक्त तथा देव-ऋषि जहाँ प्रतिदिन आते जाते रहते हैं। ऋषि – तपस्वियों के अनुकूल ऐसा अलौकिक सुखनुमा वातावरण जहाँ पर सदा सरयूजी प्रवाह वहता रहता है। ऐसे भारत वर्ष की भूमि छपैयाधाम में धर्म-भक्ति के धर साक्षात् आनंदकंद रसेश्वर माधुरी मूर्ति घनश्याम महाराज विराजमान है। छपैयावासी सदा आनंद में डूबे रहते है। वहाँ नारायण सरोवर के किनारे धर्मपिता की गाय बांधी जाती थी। मंगलनामक धर्मदेव का ग्वाला गायों की देखभाल करता था, सेवा में कोई कमी नहीं थी। लेकिन भक्ति माता को एकबार सक हो गया कि मंगल ग्वाल दूधमें कुछ मिलाता है। सुवासिनी भाभी को भी ऐसी शंका थी। अब क्या करें ?

अंत में उसके ऊपर नजर रखने का कार्य घनश्याम महाराज को भक्ति माताने दिया। सरोवर के दक्षिण किनारे गोशाला थी। प्रातः सायं दोनो समय घनश्याम महाराज की देखरेख में गाय दूही जाती थी। दूधके पात्र भी उन्हीं के देखरेख में भरे जाते थे। सभी गायों के दुहजाने के बाद ग्वाल के साथ दूधलेकर प्रभु घर आते थे।

घनश्याम को दूधका कार्य मिला इससे उन्हें बहुत आनंद था। उत्तम कार्य मिलने पर सेवा का अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा समझकर घनश्याम छपैयावासी बाल मित्रों से कहे कि मित्रों ! कल से आप लोग घर से कटोरा लेकर आना। इसके बांद सभी मित्र नारायण सरोवर के किनारे बालकों की लाइन लग जाती थी। प्रत्येक बालमित्र गाय का दूधपीते। घनश्याम बड़ी सच्चाई के साथ दूधके बरतन को भरदेते थे। अब ग्वाल के ऊपर शंका रखने का कोई स्थान हीं नहीं था। फिर भी दूधवैसे का वैसा पतला। भाभी दूधमें से दही बनाती तो अच्छी तरह जमती नहीं थी। मक्खन भी सही ढंग से नहीं बनता था। भाभी ने यह सत्यबात माताजी को कह सुनाई। माताजीने कहा कि घनश्याम की नजर बचाकर ग्वाल पानी डाल देता होगा। नहीं, माताजी, घनश्याम को कोई छेतर नहीं सकता। बड़े चालांक हैं।

भाभी – माताजी दोनो बातकर ही रहे थे कि घनश्याम के मित्र कटोरा लेकर वहाँ से निकले। भाभी पीछा करने लगी। बालको को खड़ा रखकर भाभीने पूछा, बेटा कटोरा लेकर कहाँ गये थे ? माताजी घनश्याम भैयाने कहा है कि जिनके घर दूधपीने के लिये नहीं हो वे दूधपीने के लिये गोमती के किनारे आवें। हम लोग प्रतिदिन दूधपीने जाते है। सभी एक एक कटोरा दूधपीते हैं। वे भी हम सभी के साथ दूधपीते हैं। भाभीने पूछा कि क्या, ग्वाल को इस बात की खबर नहीं है। नहीं, घनश्याम ग्वाल के चोरी से हम सभी को दूधपिलाते है। वे बड़े दयालु है। यह बात सुनकर भाभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले तो घनश्याम का स्वभाव दयालु है। उनसे दूसरों का दुःख देखा नहीं जाता। इसलिये वे बालको कोदूधपिला देते हैं। फिर भी दूधजैसे का तैसा, उतना ही आता है। इस में कुछ रहस्य अवश्य है। बालकों से पुनः उन्हों ने पूछा। घनश्याम क्या चमत्कार करते हैं। जिससे दूधकम नहीं होता। हम लोग कटोरा भरकर नारायण सरोवर का पानी ले जाते हैं। जिसे घनश्याम खाली दूधके पात्र को भरदेते है। जिससे वह खाली नहीं रहता। वाह ! घनश्याम की क्या लीला है।

उसी समय घनश्याम ग्वाला के साथ दूधलेकर आगये। प्रभु को देखर माताजी एवं भाभी हंसने लगी। भाभीने तुरंत पूछा कि दूधपतला क्यों आता है ? प्रभु निर्दोष भाव से कहे कि ताजी विआई गाय का दूधपतला ही होगा न ? उत्तर सुनकर सभी खूब हंसे आनंद-आनंद हो गया।

सं. २०६९-७० के वर्ष में चातुर्मास के समय गाँव में फिरने वाले संतो की नामावली

देश का नाम	मंडलधारी का नाम
	पांच वर्ष के लिए (६६-६७ से)
पोर-वावोल	स्वा. जयप्रकाशदासजी गुरु महंत शा. हरिकृष्णदासजी
धमासणा	शा.स्वा. अभयप्रकाशदासजी गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी
असलाली	शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी गुरु पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर)
कणभा	स्वा. निलकंठदासजी गुरु महंत हरिकृष्णदासजी
बालासिनोर	स्वा. विश्वस्वरुपदासजी गुरु स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी
आंतरोली	स्वा. धर्मस्वरुपदासजी गुरु स्वा. जानकीवल्लभदासजी (नाथद्वारा)
लुणावाडा	स्वा. हरिकृष्णदासजी गुरु नारायणजीवनदासजी (अमदावाद)
मारुसणा	स्वा. रघुवीरचरणदासजी गुरु स्वा. कृष्णजीवनदासजी (सोकली), स्वा. जगदीशप्रसाददासजी (ईडर)
ट्रेन्स सीतापुर	शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी गुरु स्वा. नरनारायणदासजी (जेतलपुर)
विसनगर	शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी गुरु स्वा. हरिसेवादसाजी (वडनगर)
रवारवरिया	शा.स्वा. स्वयंप्रकाशदासजी गुरु स्वा. श्रीहरिदासजी (जयदेवपुरा)
प्रांतीज-मोडासा	शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी गुरु स्वा. देवप्रसाददासजी (मथुरा)
	पांच वर्ष के लिए (६९-७० से)
कपडवंज	स्वा. सुखनंदनदासजी (अमदावाद)
साणंद गोधावी	शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी (अमदावाद)
शिरोही	स्वा. गुरुप्रसाददासजी गुरु स्वा. हरगोविंददासजी (कांकरिया)
विहार-गेरीता	शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी
वडुं-डांगरवा	स्वा. माधवप्रियदासजी गुरु शा. सिध्धेश्वरदासजी (सिध्धपुर)
	वर्ष के अनुसार स्मरणिका
बालवा	स्वा. आनंदप्रसाददासजी गुरु स्वा. नारायसेवादासजी (कांकरीया)
सादरा-वासणा	स्वा. नंदकिशोरदासजी (सापावाडा महंत)
भात कांसीन्द्रा	स्वा. नंदकिशोरदासजी (सापावाडा महंत)
नलकंठा	स्वा. श्रीरंगदासजी गुरु स्वा. हरिनारायणदासजी (सिध्धपुर)
विरमगाँव	स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी गुरु स्वा. गुरुप्रसाददासजी (कांकरिया)
कडी-राजपुर	स्वा. श्रीरंगदासजी गुरु स्वा. हरिनारायणदासजी (सिध्धपुर)
लांधणज	स्वा. धर्मकिशोरदासजी गुरु स्वा. आनंदजीवनदासजी (हरिद्वार)
मोरवासण	माधव स्वामी गुरु देव स्वामी (अयोध्या)
संतरामपुर	स्वा. विश्वस्वरुपदासजी गुरु स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी
ऊँझा	अनुप स्वामी गुरु स्वा. हरिस्वरुपदासजी (ध्यानी स्वामी)

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में गुरुपूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव के अलौकिक सानिध्य में तथा प.पू.भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ छाया में ता. २२-७-१३ को गुरुपूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

अहमदाबाद मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में गुरुपूर्णिमा महोत्सव प्रथमबार मनाया गया। प्रातः ८-५ मिनिट को प.पू. लालजी महाराजश्री प्रथमबार श्री नरनारायणदेव की शृंगार आरती करने पधारे थे। भूदेवो द्वारा स्वस्तीवा तथा मुख्य यजमान अ.सौ. क्रिष्णाबहन नवीनभाई मांडलिया के (मोरबी) सुपुत्र प्रतिक तथा उत्सव था सह यजमान प.भ. कांतिभाई मावजी खीमाणी (बोल्टन यु.के.) परिवारने गुरु पूजन आरती की। उसके बाद छोटे विद्यार्थी संतो योगी स्वामी, शा. यज्ञप्रकाशदास, स्वा. हरिप्रसाददास (भुज), शा. अभिषेकप्रसाददास, वामन स्वामी, आनंद स्वामी, शा. दिव्यप्रकाशदास, माधव स्वामी, गोपाल स्वामी आदि संतोने प.पू. लालजी महाराजश्री की पूजन आरती का लाभ लिया। प्रासंगिक सभा में सभी युवा संत तथा शा.स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी (वडनगर), शा. स्वा. हरिप्रसाददासजी (भुज) तथा शा. यज्ञप्रकाशदासजी (कांकरिया) आदि संतोने गुरु पूजन का महिमा कहा।

प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य भाग-५ डीवीडी का विमोचन विधिपूर्वक करके सभा को आशीर्वाद दिये २००० जितने उत्तर गुजरात के हरिभक्तों ने पदयात्रा द्वारा देव तथा धर्मकुल के दर्शन करके अपनी थकान उतारी थी। समग्र आयोजन में कोठारी पार्षद दिगंबर भगत, जे.के. स्वामी, ब्र. स्वामी राजेश्वरानंदजी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडल तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल अहमदाबाद आदि की सेवा प्रशंसनीय थी। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने समस्त संत-हरिभक्तों को युरोप से सेलफोन के माध्यम से आशीर्वाद से प्रसन्न किया था। सभा संचालन स.गु.शा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर) ने संभाला था।

(शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पू.श्रीराजा का १२ वाँ जन्मोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजाश्री की चि. सुपुत्री पू. श्रीराजा का १२ वाँ जन्मोत्सव आषाढ़ शुक्ल पक्ष-१० को ता. १८-७-१३ को गुरुवार को श्री स्वामिनारायण म्युजियम में धूमधाम से सम्पन्न हुआ। शाम को ५-३० को प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी के साथ पू. श्रीराजा श्री स्वामिनारायण म्युजियम पधारी थी। होल नं. ८ में बिराजमान श्री नरनारायणदेव के दर्शन करके होल नं. १२ में सुंदर जन्मोत्सव का आयोजन किया गया। जन्मोत्सव सभा के प्रारंभ में (बापुनगर-एप्रोच) की बालिकाओं को तैयार किये हुए श्री घनश्याम महाराज के बाल चरित्रों का अलौकिक प्रदर्शन पू. श्रीराजा के वरद् हाथों से उद्घाटन किया गया। उसके बाद बालवा तथा विसनगर की बालिकाओं द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया। प.पू. गादीवालाश्रीने सभी सत्संग बहनों को अपनी बच्चीओ में शुभ संस्कार हेतु बालिका मंडल में भाग लेने का अनुरोधकिया। इस प्रसंग में कालुपुर तथा विसनगर की सांख्ययोगी बहनोने श्रीराजा को शुभेच्छा दी। जन्मोत्सव प्रसंग में अहमदाबाद, बालवा, विसनगर, मकाखाड, हिंमतनगर तथा झुंडाल आदि गाँवों की वालिकाए उपस्थित थी।

(रुपलबहन - बापुनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४१ वाँ प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में गाँवो में से भिन्न भिन्न प्रवृत्तिओं का आयोजन, श्रीनगर (कलोल) मंदिर में वृक्षारोपण अंतर्गत पौधो का वितरण।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में १६ आयोजनो में से ४१०० वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत ११०० पौधो का वितरण ता. २०-७-१३ शनिवार की शाम को श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल श्रीनगर में सम्पन्न हुआ। कड़ी कलोल के ३० गाँवों के युवानोने गुजरात हरियाली क्रांति बनाने के कार्यक्रम में भाग लिया। संतो में शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (कोटेश्वर),

माधव स्वामी, सत्यनारायण मंदिर के महंतश्री (कलोल) तथा सामाजिक कार्यकर्ता के हाथों से वृक्षारोपण किया गया । ३० गाँवो के युवानोने संतो तथा कार्यकरोने वृक्षारोपण कर उसकी जतन की जिम्मेदारी ली । समग्र आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नारायणघाट (टीम नं.-६) की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(समस्त सत्संग समाज श्रीनगर-कलोल)

माणसा गाँव में वृक्षारोपण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें (गांधीनगर में) प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में १६ कार्यक्रम के आयोजन में से सामाजिक कार्यक्रम अनुसंगित ४१०० वृक्षारोपण में माणसा-विजापुर के ७ गाँव के हरिभक्तोंने वृक्षारोपण में भाग लिया था ।

इस प्रसंग में अहमदाबाद मंदिर के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) आदि संत मंडलने वृक्षारोपण का वितरण किया । समाज सेवक प.भ. गोविंदभाई भी इस प्रवृत्ति में भाग लिया । स.गु.शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव की रुपरेखा को विगतपूर्वक समझाया था । संतोने प्रथम समाज की वाड़ी में वृक्षारोपण का आरंभ किया था । ता. ७-७-३ का कार्यक्रम समाज की वाडी माणसा में किया गया ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा यासिनभाई)

उत्तर गुजरात के हरिभक्तों द्वारा श्री नरनारायणदेव दर्शन हेतु समूह पदयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से आगामी ता. १३-१०-१३ रविवार के शुभ दिवस को प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ४१ वाँ प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाने का आयोजन निर्धारित किया गया । जिस प्रसंग के उपलक्ष में भिन्न-भिन्न कार्यक्रमो में से ८ सामाजिक तथा ८ धार्मिक प्रवृत्तिओं का आयोजन किया गया । गुरुपूर्णिमा के शुभ दिवस पर समग्र उत्तर गुजरात के गाँव में से माणेकपुर, मकाघाट, लिंबोद्रा, बालवा, मोखासण, सोजा, विजापुर, भावपुर, जेपुर, वजापुर, सांकापुरा, आमजा, चांदीसणा, कड़ी-कलोल प्रांत के टांकीया, डांगरवा, गोविंदपुरा (वेडा), मारुसणा आदि गाँवो के २००० जितने हरिभक्तोंने समूह पदयात्रा द्वारा अहमदावाद श्री नरनारायणदेव के दर्शन किये ।

नोट : आगमी ता. २९-९-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वे जन्मोत्सव के उपलक्ष में अहमदाबाद सीटीके प्रत्येक मंदिरो द्वारा पदयात्रा का आयोजन किया गया हैं । भाग लेने वाले प्रत्येक हरिभक्तो को ता. २९-९-१३ प्रातः ७-३० बजे श्री स्वामिनारायण मंदरि कालुपुर पहुंचने के लिए विशेष अनुरोधहै ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल नारायणघाट, हिरावाडी)

संतो द्वारा गाँव में कथावार्ता का आयोजन

स.गु.शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी द्वारा भीमपुरा, वजापुर, भागपुर, जेपुर आदि गाँवो में ४१ समूह महापूजा, १२१ जनमंगल पाठ, अखंड धून, कथावार्ता द्वारा हरिभक्तो को प्रसन्न कर दिव्य लाभ दिया । उसी प्रकार गोधावी, मणीपुरा, गरोडीया गाँव में कथावार्ता की ।

(शा. कुंज स्वामी)

वृक्षारोपण कार्यक्रम

४१ प्राकट्योत्सव के उपलक्ष में सादरा-वासणा केमुख्य ८ विस्तार में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के युवानो ने स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा स.गु. महंत शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) के हाथो से वृक्षो का स्वीकार करके अपने विस्तार में १५०० पौधो का रोपण किया गया । ता. ७-७-१३ रविवार को प्रातः श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में वृक्षारोपण प्रसंग पर सुंदर सभा का आयोजन किया गया । सभा संचालन स.गु.शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदाजीने किया था । पू. महंत स्वामीने युवानो को आशीर्वाद दिये ।श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, नारायणघाट)

मुबारकपुरा (गांधीनगर) ४४१ मिनिट की अखंड धुन का आयोजन किया गया

४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में गांधीनगर जिल्ला के मुबारकपुरा गाँव के हरिभक्तो ने साथ मिलकर देवशयनी एकादशी को सुबह ८-३९ से साम के ४ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून की । समापन प्रसंग में नारायणघाट मंदिर के महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी संत मंडल के साथ पधारे थे । ठाकुरजी की आरती की । शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजीने श्री स्वामिनारायण महामंत्र का महिमा कहा । शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने एकादशी का माहाताम्य कहा ।

सभा के बाद जनमंगल पाठ करके पूर्णाहुती की गयी ।(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल-मुबारकपुरा)

टांकीया - गाँव में सत्संग सभा का आयोजन किया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा समस्त धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर धार्मिक कार्यक्रम किया गया । रात्रि में टांकीया गाँव में कलोल श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के साथ शा. माधवप्रियदासजीने पधाकर श्री नरनारायणदेव तथा धर्मवंशी की महिमा की कथा, धून, कीर्तन आदि कार्यक्रम किये। (महेन्द्रसिंह - टांकीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में स.गु.शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण महिला मंडल साबरमती की तरफ से १४१ पूजा पेटी (संपूर्ण) तैयार करके गाँवो में बहनो को देने से पहले पूजा किये और किस प्रकार करनी चाहिए इसकी समझ दी गयी । जन मंगल समूह पाठ भी किया गया । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से महिला मंडल की बहनो द्वारा रोज सत्संग सभा होती है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबापुर (गांधीनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबापुर में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मडंल द्वारा ता. १८-७-१३ को प्रातः ५-०० से रात्रि के ११-०० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गयी । साथ में समूह मंत्रलेखन तथा जनमंगल का पाठ भी किया गया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा (हीरामोती)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण चांदखेडा में १४१ मिनीट की महामंत्र धून की गयी । ४१ भाईओ-बहनोने चांदखेडा से श्री नरनारायणदेव (कालुपुर) की पदयात्रा की । ४१ बाल सभा में से १४-७-१३ को प्रथम बालसभा की गयी।

श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर (गांधीनगर)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४१ वें प्राकट्योत्सव प्रसंग के उपलक्ष में श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर में कई बहनोने पूजापेटी से पूजा करने का संकल्प किया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर का ५२ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से ज्येष्ठ कृष्णपक्ष-१२ ता. ४-७-१३ को सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज का ५२ वाँ पाटोत्सव प.भ. नरेशकुमार भोगीलाल भावसार (अहमदाबाद) के परिवार यजमान पद पर विधिपूर्वक धूमधाम से किया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार अभिषेक विधिपूर्वक किया गया । प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती करके आशीर्वाद लिये । समाज सेवक श्री सोमाभाई मोदी, नगरपालिका प्रमुख सुनीलभाई मेहता, श्री आई. एम. भावसार तथा यजमान श्री नरेशभाई का प.पू. आचार्य महाराजश्री ने शाल ओढ़ाकर मूर्ति देकर आशीर्वाद दिये।

संतो में स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (अहमदाबाद) कोठारी शा. विश्वप्रकाशदासजी तथा शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने प्रेरणात्मक प्रवचन किया था । प.पू. महाराजश्रीने वडनगर सत्संग की निष्ठा तथा भावि पेढी में संस्कार सिंचन करने की शुभ भावना व्यक्त की । सभा संचालन महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजीने किया । अन्नकूट सेवा पूजारी शा.स्वा. अभिषेकप्रकाशदासजीने की। (मोदी नविनचंद्र एम.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर १६७ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज का १६७ वाँ पाटोत्सव मनाया गया।

ता. १४-६-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक वेदविधिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रासंगिक सभा में स.गु. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी, स.गु.स्वा. रघुवीरचरणदासजी तथा स.गु. महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजीने प.पू. महाराजश्री को पुष्पहार

पहनाकर आरती पूजन अर्चन करके आशीर्वाद लिये । संतो में शा.स्वा. हरिकेशवदासजी तथा पधारे हुए संतोने प्रेरणात्मक प्रवचन में गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के सुवर्णकलश तथा सिंहासन बनवाने की घोषणा की ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्रीने आशीर्वाद देकर सेवा प्रदान करने का अनुरोधकिया । सभा संचालन शा. प्रेमप्रकाशदासजने किया । प्रसंग में शा.स्वा. हरिजीवनदासजी, श्रीजीप्रकाशदासजी, कोठारी सत्यसंकल्पदासजी, स्वा. विश्ववल्लभदासजी तथा कुंज विहारी स्वामी प्रेरणारुप थे। (कोठारी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुकडीया (ईडर) का ३० वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद सेतथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (ईडर) की प्रेरणा से प.भ. डॉ. बाबुभाई माणेकलाल भावसार परिवारने यजमान पद पर कुकडिया मंदिर का ३० वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथो से विधिपूर्वक मनाया । इस प्रसंग पर ईडर के नरसीपुरा, सापावाडा, पृथ्वीपुरा, अंकाला, गाँवो में संतो द्वारा सत्संग सभा की गयी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक तथा अन्नकूट आरती के दर्शन कर हरिभक्तगण धन्य हो गये । यजमान प.भ., डॉ. बाबुभाई आदि परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन आरती की । सभा संचालन स्वा. प्रेमप्रकाशदासजीने किया । महापूजा आदि सेवक शा. कुंजविहारीदासजी तथा शा. विश्ववल्लभदासजीने करवाई ।(कोठारी सत्यसंकल्पदास, ईडर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सायरा (साबरकांठा) मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु.शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी (मथुरा महंत) के मार्गदर्शन से मू.अ.गु.स.गु. गोपालानंद स्वामी की प्राक्यभूमि विस्तार सायरा गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्री का सायरा गाँव में शोभायात्रा निकालकर स्वागत किया ।

ता. २८-५-१३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने नूतन मंदिर में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा शास्त्रोक्त विधिपूर्वक आरती की थी । जिस में मूर्ति तथा सिंहासन का यजमानश्रीने लाभ लिया । इस प्रसंग पर त्रिदिनात्मक त्रिकुंडी महायज्ञ शास्त्री प्रियांगभाई आदिने करवाया था । यज्ञ की पूर्णाहुति की आरती प.पू. आचार्य महाराजाश्री तथा यजमानश्री । प.पू. महाराजश्री रामजी मंदिर के आरती करके मंदिर में अन्नकूट की आरती की । सभा में शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा रमनभाईने प.पू. आचार्य महाराजश्री का फूलहार से स्वागत किया था । सभा संचालन ब्र.शा.स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (छपैया)ने किया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिभूषण त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर महंतश्री)ने की । कथा की पूर्णाहुति की आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने की ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पूजन का लाभ प्रत्येक यजमान परिवारने आरती-भेट-पूजन करके किया ।

उसके बाद भूमिदान के दाता तथा छोटे-बड़े यजमानश्रीओ को प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से आशीर्वादरुप फुलमाला प्राप्त कर कृतार्थ हुए ।

मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग में अमदाबाद, मूली, वडताल आदि संतो के संत बड़ी संख्या में पधारे थे । ठाकुरजी की नगरयात्रा में बडी संख्या में मूली, अहमदाबाद, वडताल, छपैया तथा हरिद्वार के संतगण जुड़े थे । सरबत-पानी की व्यवस्था यजमानश्रीने करवाई । ठाकुरजी का धान्य निवास यजमान के घर किया गया ।

मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के शुभ दिवस पर पधारे हुए संतो मे से महंत स.गु.शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, शा. विश्वविहारीदासजी, स.गु.शा.पी.पी. स्वामी (महंतश्री नारायणघाट), शा. चंद्रप्रकाशदासजी, स्वा. धर्मकिशोरदासजी, शा. आनंदस्वरुपदासजी (मथुरा) आदि संतोने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया । शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजीने भी प्रवचन किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्रीने निर्माण कर्ता संत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये ।

सेवा में जुड़े संतो में से स्वा. अनिरुद्धचरणदासजी, जे.पी. स्वामी, श्रीजीप्रकाश स्वामी, धर्मप्रियदासजी (मूली), भंडारी स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी, स्वा.

निलकंठचरणदासजी, स्वा. धर्मकिशोरदासजी तथा स्वा. विष्णुप्रसाददासजी (अहमदाबाद), शा.स्वा. आनंदस्वरुपदासजी (मथुरा) आदि संतोने श्रद्धा से सेवा की। माणसा, ईडर, लालोडा, कलोल, सिद्धपुर आदि गाँवो से संतगण पधारे थे।

तीन दिवस तक गाँव के तथा बाहर से पधारे भक्तों को प्रसाद में भोजन करवाया गया। २०० युवको ने सुंदर सेवा की। चंडेरा पटेल, दिनेश पटेल (बायड), सलील पटेल ,मयंक पटेल (आकरुंद), जसुभाई माधवगढ), जेड.डी. उपाध्याय (मथुरा), राजुभाई पटेल तथा सायरा तथा धनसुरा युवक मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी। कोठारी रमणभाई, पूनमभाई, डाह्याभाई, अनीलभाई, अल्पेशभाई, दिवन्य, भोला पटेल, आदि युवको तथा स्वयंसेवक, भाईओं को प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये। अंत में मथुरा महंत स्वामीने आभार विधिकी। (अल्पेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में शिखरबद्ध मंदिर का खातमुहूर्त

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से मोडासा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्तो से ता. ३-६-१३ को शिखर वाले मंदिर का खात मुहूर्त किया गया। प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने भूमिदान, खात मुहूर्त के दाता आदि को फूलहार पहनाकर सन्मानित किया। सभा में महंत शा. हरिजीवनदासजी (हिंमतनगर) महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानदंजी, महंत शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) तथा शा. आनंदजीवनदाजी (मथुरा) आदि संतोने प्रासंगिक उद्बोधन किया। स.गु. महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, महंत स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) कोठारी जे.के. स्वामी, भंडारी स्वामी, सूर्यप्रकाशदासजी आदि संत गण उपस्थित रहे थे।

मंदिर निर्माण कर्ता स.गु. महंत शा.स्वा. अखिलेश्वरदासजी ने प्रासंगिक रुपरेखा समायी इस प्रसंग में स्वा. नीलकंठचरणदासजी, स्वा. विष्णुप्रसाददासजी, स्वा. धर्मकिशोरदासजी, शा.स्वा. आनंदस्वरुपदासजी तथा आकरुंद, बायड, सायरा, कंजरीकंपा तथा माधवगढ गाँव के हरिभक्तो ने सुंदर सेवा की। श्री घनश्याम महिला मंडल के बी. प्रजापति, अमरतभाई, आर्किटेक चिराग सोनी, सुभाषभाई सोनी, रजनीभाई, हर्षिलभाई, मनुभाई आदी हरिभक्तोने सेवा की। के.बी. प्रजापति साहबने आभार विधी की। (रजनी तथा दशरथ प्रजापति)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा महंत शा. घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का केशर स्नान स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी ने करवाया था। जिस के यजमान प.भ. नारणभाई ईश्वरभाई पटेल थे। प्रासंगिक सभा में स्वामीने सर्वोपरी श्रीहरि तथा धर्मकुल की महिमा कही। सत्संग सभा में शा. घनश्याम स्वामीने कथा वार्ता का लाभ दिया। गवैया चंद्रप्रकाश स्वामीने कीर्तन भक्ति कर आनंदित किया।

श्री स्वामिनारायण मंदिर साणंद का ३६ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा साणंद मंदिर मे सेवा पूजा करने वाले वयोवृद्ध ब्र. स्वा. संतोषानंदजी की प्रेरणा से श्री स्वामनारायण मंदिर साणंद में बिराजमान ठाकुरजी का ३६ वाँ पाटोत्सव ता. १५-७-१३ को विधिपूर्वक मनाया गया। पाटोत्सव के यजमान प.भ. अ.नि. गोदावरीबहन तथा मणीलाल हेमचंदभाई ठक्कर की स्मृति में तथा पुत्र प्रवीणभाई आदिने लाभ दिया था। (जे.डी. ठक्कर)

कड़ी गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कड़ी गाँव में ता. २१-७-१३ को सुंदर सत्संग सभा की गयी। इस प्रसंग पर नारायणघाट मंदिर से शा. माधवप्रियदास स्वामी तथा भानुप्रियदास स्वामीने सर्वोपरि श्रीहरि तथा धर्मकुल की महिमा कही। (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, कड़ी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उंझा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्रीहरि के प्रसादीभूत दिव्य चरणो से अंकित ऐसे उंझा श्री स्वामिनारायण मंदिर के ७२ वें पाटोत्सव प्रसंग पर त्रिदिनात्मक आख्यान कथा शा.स्वा. माधवप्रियादसजी (सिध्धपुर गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। समग्र प्रसंग का आयोजन अनुपम स्वामी तथा

पूजारी आदिने किया था । ठाकुरजी का अभिषेक अन्नकूट आदि किया गया। (माधव स्वामी)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की निश्रा में गुरुपूर्णिमा महोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा नरनारायणदेव गादी के छठ्ठे (निवृत) आचार्य प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ निश्रा में आषाढ शुक्लपक्ष-१५ गुरु पूर्णिमा को गुरु पूजन महोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

ता. २१-७-१३ शाम को प.पू. बड़े महाराजश्री मूली में पधारे थे । मूली मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्यामसुंदरदासजी तथा संत हरिभक्तोंने स्वागत किया । प.पू. बड़े महाराजश्रीने ठाकुरजी की आरती की ।

ता. २२-७-१३ को प्रात- श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराजकी शृंगार आरतीका यजमान परिवारो ने की ।

सभा संचालन श्री शैलेन्द्रसिंह झालाने किया । प्रासंगिक प्रवचन में शा. पी.पी. स्वामी (नारायणघाट महंतश्री) ने आचार्यश्री तथा धर्मकुल एवं देव का माहात्म्य समझाया । प.पू. बड़े महाराजश्री खूब प्रसन्न होकर अन्तर्हृदय से सभी से कहा कि देव के प्रति उपासक निष्ठा, निश्चय रखने से जीव का कल्याण होगा । मूली देश के सभी भक्तजन गुरु पूजन करके गुरुऋण से मुक्त हो गये । महंत स्वामी सुंदर व्यवस्था किये थे। (को. शा.स्वा. व्रजभूषणदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगधा १४६ वां पाटोत्सव

मूली श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के विभाग का श्री स्वामिनारायण मंदरि धांगधा का १४६ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से ता. १६-७-१३ को धूमधाम से मनाया गया था । मंदिर में बिराजमान हरिकृष्ण महाराज की प्राण प्रतिष्ठा आद्याचार्य प.पू.ध.धु. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के वरद् हाथो से हुई थी । मंदिर में सेवा पूजा करने वाले स्वामी भक्तिहरिदासजी तथा उनके शिष्य मंडल ने ठाकुरजी की आरती करके कथा का सुंदर लाभ दिया था ।

(को.स्वा. व्रजभूषणदासजी)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) द्वितीय पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं एस.पी. स्वामी, पू.पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) के अथक परिश्रम से एटलान्टा श्री स्वामिनारायण मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव २० जून से २२ जून तका मनाया गया था ।

प्रसंग के प्रारंभ में पोथीयात्रा तथा महिलाओ द्वारा गरबा इत्यादी का कार्यक्रम किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम) के वक्तापद पर श्रीहरि वनविचरण पर सुन्दर कथा हुई थी । हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर कथा का लाभ लिये थे । उत्सव के यजमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

२२ जून को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन किया गया था । जिसका हजारों भक्त दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे ।

अन्त में पू. महाराजश्री सभी भक्तों को वनविचरण की पुस्तिका भेट करके सन्मानित किया था । सभी को हार्दिक आशीर्वाद देते हुए कहे कि भगवान आपको हरतरह से सुखी करें । इस उत्सव में सेवा करने वाले श्री नरनारायणदेव मंडल के तथा महिला मंडल एवं अन्य सभी भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । थोड़े समय में सत्संग की वृद्धि देखकर महाराजश्री बहुत प्रसन्न हुए थे। (पुजारी स्वा. एटलान्टा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद की तरफ से प्रकाशित श्रीमद् सत्संगिजीवन १ से ५ प्रकरण संस्कृत-अंग्रेजी ग्रन्थका विमोचन

यु.के. में रहने वाले हरिभक्तों के बालक गुजराती नहीं समझपाते वे भी सम्प्रदाय के शास्त्रों का ज्ञान कर सकें इसलिये प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्रीने कच्छ केरा के लंडन में रहने वाले अंग्रेजी भाषा के अच्छे जानकार प.भ. जेठालाल धनजी सवाणीने सत्संगिजीवन (मूल) प्रकरण १ से ५ तक अंग्रेजी कथा में अनुवाद करने की आज्ञा की थी । पूर्ण होते ही श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुरकी तरफ से

छपने का कार्य करके लंडन विल्सडनलेन श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री घनश्याम महाराज के रजत जयंती के अवसर पर ग्रन्थ का विमोचन किया गया था।

इस प्रसंग पर प.भ. जेठाभाई, स्वामी निर्गुणदासजी, श्री नानजी मेधती हीराणी (नाराणपर) श्री दिपकभाई कानजी राबड़ीया, (बलदीया वर्तमान सीडनी) तथा पुस्तक के प्रकाशनमें आर्थिक सहयोग देने वाले दाताश्री देवसीभाई हालाई (सूरजपर वर्तमान मोम्बासा) आदि सभी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिये। श्रीमती रश्मिताबहन कपिल राबडीया (मांडवी) (जिन्होंने अनुवाद में सहायता की) को. प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने आशीर्वाद देकर प्रसादी की कंठी पहनाई।

यह पुस्तक श्री स्वामिनारायण मंदिर के साहित्य केन्द्र तथा लंडन श्री स्वामिनारायण मंदिर में भी उपलब्धहै।

(ब्र. पूजारी स्वा. राजेश्वरानंदजी)

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमदावाद : सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के सर्वोपरि उपासक, उफदेशक श्री नरनारायणदेव देश के अग्रगण्य हरिभक्त शिरोमणी प.भ. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहब के शिष्य प.भ. श्री नंदलालभाई भाईचंद कोठारी (उम्र ८७ वर्ष) भगवान श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए २६-७-१३ को अक्षरनिवासी हुए हैं। जिसके अक्षरनिवास से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बड़े महाराजश्री को अत्यन्त दुःख हुआ है। उन्होंने महाराज अपने धाममें सुखिया करें एसी परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

अमदावाद (मूल उमरेठ गाँव): गं.स्व. हसमुखबहन (हसुबा) जमुभाई सेलत (उम्र. ९६) ता. १-७-२०१३ को श्रीहरि का अकंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है।

अमदावाद-बापूनगर : चंपाबहन मनुभाई डोबरिया ता. ७-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

लसुंद्रा : प.भ मुकेशभाई पटेल की माताजी शांताबहन पटेल ता. २१-६-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

वडगाँव : प.भ गौरीशाभी अमराभाई राठोड ता. ८-७-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

बलोल-भाल : प.भ भावनाबहन वजेसंग परमार ता. २-६-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

मणीयोर (ता. ईडर) : प.भ पटेल मोदीबहन जोईताभाई ता. १-६-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अमदावाद : प.भ मणकवाणा समजुबहन शामजीभाई उम्र ९५ वर्ष) ता. १४-७-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अजरापुरा : पटेल अमरतबाई नारणभाई की माताजी रुबीबहन ता. १४-७-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

नांदोल : प.भ रतीलाल अंबालाल पटेल ता. ३१-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अमदावाद-बोपल : प.भ विनयकांत नटवरलाल ठक्कर (उम्र ६८ वर्ष) ता. ३१-५-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

मांडल : प.भ कुंवरबहन भगवानभाई पटेल ता. २३-७-१३ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

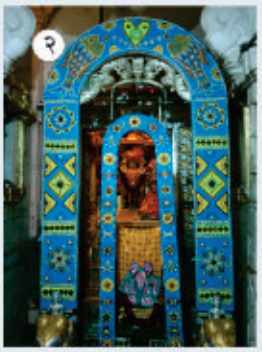

प.पू. आचार्य महाराजश्री के आगामी ४१ वे जन्मोत्सव (दशेरा) के अवसर पर विविध गांव - मंदिरोमें कार्यक्रम

(१-२-३) अमदावाद, कालुपूर, जेतलपुर तथा जीवराजपार्क मंदिर में अलौकिक हिंडोला दर्शन ।(४) जेतलपुरधाम में गुरुपूर्णिमा को गादी दर्शन करते हुए हरिभक्त ।(५) लंडन विल्सडन मंदिर में अमदावाद मंदिर कालुपुर से प्रकाशित श्रीमद् सत्संगिजीवन का (प्र. १ से ५ संस्कृत-अंग्रेजी) विमोचन करते हुए प.पू. महाराजश्री साथ में भुज मंदिर के महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी, अमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. निर्गुणदासजी, भाषांतर करने वाले जेठालाल सवाणी तथा पुस्तकमें दान देने वाले प.भ. देवशीभाई हालाई आदि हरिभक्त ।(६) कर्मशक्ति मंदिर में महिला मंडल द्वारा अखंड धुन । कलोल श्रीनगर मंदिर में वृक्षोंका रोपण ।(८) लवारपुर मंदिर में संतो द्वारा सत्संग सभा ।(९) माणसा में वृक्षारोपण वितरण करते हुए अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी ।(१०) नारायणघाट मंदिर में वृक्षारोपण करते हुए अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी तथा महंत पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) (११) समौ गाँव में वृक्षारोपण करते हुए शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर)

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

(१) एटलान्टा (अमेरिका) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।(२) कोलोनिया मंदिर में ठाकोरजी के समक्ष आप्रोत्सव ।(३) एलेन्टाउन (आई.एस.एस.ओ.) चेप्टर में सत्संग सभा ।(४) न्युझिलेन्ड ओकलेन्ड मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्रीकी तरफ से दीये हुए प्रसादी के चरणार्विंद के पूजन करते हुए प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल ।

અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવની અસીમ કૃપાથી તથા સમગ્ર ધર્મકુળના આશીર્વાદથી

પ.પૂ.ધ.ધૂ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો

૧૩-૧૦-૨૦૧૩, રવિવાર (દશેરા), સમય સાંજે - ૪:૩૦ કલાકે

સ્થળ :- ગાંધીનગર

ઉત્સવના ઉપલક્ષમાં થનાર આયોજનો

ધાર્મિક આયોજનો

- ૪ કરોડ ૪૧ લાખ ૪૧ હજાર શ્રી સ્વામિનારાયણ મંત્ર લેખન
- ૪૧ હજાર જનમંગલ નામાવલી ના સમૂહ પાઠ
- ૧૪૧ મિનિટની ૪૧ ગામે અખંડ ધૂન
- ૪૧ ગામે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૪૧ પૂજા પેટી વિતરણ
- ૪૧ વચનામૃતના પાઠ
- ૪૧૦૦ હરિભક્તો દ્વારા સમુહ પદયાત્રા (શ્રી નરનારાયણદેવ ના દર્શન)
- ૧૧૪૧ શ્રી સ્વામિનારાયણ માસિક અંકના આજીવન સભ્ય પદની ઝુંબેશ

સામાજીક આયોજનો

- ૪૧ નિશુલ્ક મેડિકલ કેમ્પ
- ૧૪૧ બોટલ બ્લડ ડોનેશન
- ૧૪૧ યુવાનો ને વ્યસન મુક્તિ
- ૪૧ ગામે ગામસફાઈ
- ૪૧૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૪૧ ટ્રાઈસિકલ (વિકલાંગોને અર્પણ)
- ૪૧૦૦ અનાથ બાળકોને જમાડવા
- ૪૧૦૦ વિદ્યાર્થીઓને શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ (ગામડાના)

આયોજક :- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર - નારાયણઘાટ તથા સમસ્ત સંત્સગ સમાજ - અમદાવાદ શહેર તથા ઉત્તર ગુજરાત તથા શ્રી નરનારાયણદેવ યુવક મંડળ - અમદાવાદ દેશ. વતી, સ.ગુ દેવપ્રકાશદાસજી તથા સ.ગુ.શા.પી.પી.સ્વામી (નારાયણઘાટ મહંતશ્રી)

Jagadish Offset
Praful Kharsani